हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Chetan kumar meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 2 5 4 8 0 8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 140

टिप्पणी (Remarks): उत्तम अंक, अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करैं कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

उपर्युक्त काव्यांश सूर कृत ~~[illegible]~~ 'सूरसागर' के पदों के ~~[illegible]~~ शुक्लजी द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' नामक ~~[illegible]~~ उपालंभ काव्य से उद्धृत है।

उपरोक्त पंक्तियों में उद्धव तथा गोपियों के संवाद की झलक मिलती है। गोपियाँ कृष्ण के बारे में ~~[illegible]~~ उद्धव से बात करती हैं कि–

व्याख्या ⇒ जब से हरि अर्थात् कृष्ण को चेहरा देखा है, ~~[illegible]~~ तब से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हमें भी तारे नजर आने लगे हैं। उन कृष्ण की याद में हमारा घूँघट न चाहते हुए भी तारे के रूप में उन्हें देखने को हट जाता है। उन कृष्ण का रूप ही ऐसा है कि बरबस ही हमें अपनी ओर खींच लेता है। मुस्कान के जरिये गोपियाँ उद्धव को समझा रही है कि क्या कान्हा हमारे बारे में विचार करते हैं।

विशेष :- ① विशेष माधुर्य युक्त मेंझी हुई ब्रज भाषा

② उपालंभ देने से पहले गोपियाँ अपनी स्थिति का वर्णन उद्धव से करती हैं।

③ 'हट ~~जाऊं~~ जाति जाति' में शब्दालंकार (अनुप्रास)

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौरँ मै भयौ भौरे की नाव।।

संदर्भ / प्रसंग :- निर्दिष्ट काव्यावतरण रीतिकाल के सबसे प्रयोगधर्मी कवि बिहारीलाल के दोहा संग्रह 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है। प्रस्तुत पंक्तियों में नायिका अपनी दूती सखी से अपने प्रति प्रेमी के प्रति उत्कट प्रेम की अभिव्यंजना करती है।

व्याख्या :- नायिका, नायक के सौंदर्य पर मोहासक्त है। वह प्रेम इतना अधीर हो रहा है कि वह नायक के बिना एकाग्र नहीं रह पा रही है। लज्जा ~~की जो~~ का जो आवरण है, उसे हटाकर नायिका प्रेमी से मिलना चाहती है, उसके प्रेम की साक्षात् अनुभूति चाहती है। उसके अंग अंग में डूब जाती है। वह प्रेम में उस प्रकार भटक सी गयी है, जिस प्रकार एक नाव समुद्र में डूबी हुई रह जाती

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है और सहज ही अपनी वायु अर्थात भावनाओं के वेग की दिशा में बह जाती है, वैसी ही मनोदशा इस नायिका की है।

विशेष: (1) उपरोक्त पंक्तियाँ रीतिकाल के संपूर्ण श्रृंगार का निचोड़-सा प्रतीत होती है। यहाँ 'विप्रलंभ श्रृंगार' का बेहद सृजनात्मक वर्णन बिहारी ने किया है।

(2) बिहारी ने नायिका का साधारणीकरण किया है, क्योंकि ऐसी भावनाएँ साधारण मध्यवर्ग की नायिका ही प्रदर्शित करती है।

(3) छोटे से दोहे में विशालता को समेटकर 'गागर में सागर' भरने की कला बिहारी के पास अद्भुत है, इसलिए उनके 'दोहरे ज्यों नाविक के तीर' से प्रतीत होते हैं।

5 1/2 / 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के सबसे सशक्त हस्ताक्षर 'महाप्राण निराला' के शक्ति काव्य के प्रतिमान 'राम की शक्ति पूजा' लंबी कविता से उद्धृत हैं। जब राम दुर्गा के रावण के पक्ष में होने एवं सीता की मुक्ति को कठिन जान निराशा से भरे होते हैं, तो विश्वस्त व प्रौढ़ जाम्बवान उक्त पंक्तियाँ कह व्यावहारिक समाधान सुझाते हैं कि –

व्याख्या – जाम्बवंत राम से कहते हैं कि रावण अत्यंत पापी है। उसने साधना से शक्ति अर्थात् दुर्गा को अपने वश में किया है, जिसके बलबूते वह जन को त्रस्त कर रहा है, किन्तु तुम जगत के कल्याण की भावना से संपृक्त हो। ऐसे में यदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तुम शक्ति का वरण कर निश्चित ही उसका नाश कर पाओगे। इसके लिए सबसे पहले पुरुष से विराम लेकर, तब तक शक्ति की मौलिक आराधना करनी होगी जब तक कि वह प्राप्त न हो जाए।

विशेष -: ① प्रस्तुत पंक्तियाँ सीता मुक्ति; देश की मुक्ति; भारतीय संस्कृति की मुक्ति; नारी की मुक्ति का व्यावहारिक समाधान उद्बोधन के तरीके से सुझाती हैं। ये पंक्तियाँ किसी भी व्यक्ति में जोश भरने के लिए पर्याप्त हैं।

② शक्ति की मौलिक कल्पना से तात्पर्य यहाँ शक्ति की पूजा प्रकृति; आंतरिक साधना से व सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना है।

③ काव्य पंक्तियों की खड़ी बोली का प्रसादत्व व मधुरता खड़ी बोली के संदर्भ में भारतेंदु की शुब्धता (खड़ी बोली में कविता नहीं बनती) को दूर करने के लिए पर्याप्त है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दु:ख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याख्येय उक्तियाँ छायावाद के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचना 'कामायनी' से उद्धृत हैं। यह कविता प्रसाद की काव्यकला का संपूर्ण निचोड़ है।

प्रस्तुत पंक्तियों में 'श्रद्धा सर्ग' में श्रद्धा मनु को निराशा के माहौल में आकंठ डूबे व मोहासक्ति से घिरे मनु को समझाती है।

श्रद्धा मनु को कहती है कि जीवन में काम की भावना सहज है, और त्याग कर जीवन के अन्य उद्देश्य पूरे करने के सपने पूरे नहीं होंगे। क्योंकि यह जीवन की सहज भावना है, जिसको सहज संतुष्ट कर ही अपना ध्यान भवधाम में केन्द्रित कर सकते हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मनु के चिंता में संलग्न रहने पर श्रद्धा उससे कहती है कि दुख की पिछली रात बीत चुकी है, जो हो गया वह हो गया, किंतु अब नवल प्रभात अर्थात नवीनजीवन को शुरू करने का प्रयास करना चाहिए; पिछला जीवन जिन कमियों की वजह से नष्ट हुआ, अब उनको भुलाकर वर्तमानजीवन को सुखमय बनाकर भविष्य की राह देखनी चाहिए।

विशेष ⇒ (1) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'कामाध्यात्मवाद' की चेतना पर आधारित हैं। यहाँ प्रसाद ने काम को त्याज्य नहीं, सहज स्वीकारने योग्य बनाया है।

(2) पंक्तियों का निष्कर्ष है कि व्यक्ति को पिछले कर्मों की वजह से वर्तमान को नष्ट नहीं करना चाहिए। यह बात आज बेहद प्रासंगिक है।

(3) दिनकर ने श्रद्धा को 'मध्यकालीन गुलामी' का प्रतीक बताया, परंतु यहाँ वह आधुनिक विचार से संपृक्त प्रतीत हो रही है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

प्रस्तुत काव्यांश शक्ति काव्य के प्रतिनिधि छायावादी कवि 'निराला' की अत्यंत सर्जनात्मक कविता 'राम की शक्तिपूजा' से अवतरित है।

राम रावण को हराने के लिए शक्ति को अपनी ओर करने हेतु कठोर साधना करते हैं, किंतु देवी दुर्गा अंतिम इन्दीवर को उठाकर ले जाती हैं, जिससे 'सीता मुक्ति' का प्रयोजन राम को असंभव-सा लगता है, और वे आत्मधिक्कार से भर जाते हैं।

राम द्वारा पुनः शक्ति को अवतरित न होते देख अपनी संपूर्ण जीवन की सिद्धि, आचरण और प्रयासों पर आत्मग्लानि होती है। राम सोचते हैं कि जिस सीता की मुक्ति के लिए वे इतने प्रयास कर रहे हैं, वे अब विफल होने वाले हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ऐसे जीवन पर उन्हें धिक्कार है जो अपनी प्रेयसी की मुक्ति न करा सकें। किन्तु राम हार मानने वाले नहीं हैं, उनका दूसरा मन अर्थात् विचार पक्ष भी है जो सीता मुक्ति के लिए युद्ध भी करने को उद्यत है और नया रास्ता तलाशता है।

वैशिष्ट्य :-

(1) 'आत्मधिक्कार' से निकलकर 'एक और मन' द्वारा राम को निराशा से बाहर निकालकर विचार देता है कि मैं राजीवनयन हूँ, अतः एक नयन रूपी इन्दीवर को अर्पित कर साधना पूरी कर सकता हूँ।

(2) यहाँ लगता है राम ईश्वर नहीं, सहज मानव हैं, जो आत्मधिक्कार जैसी मानवोचित भावनाओं से घिरे हैं तथा यहाँ वे शक्ति की आराधना भक्ति से नहीं योगसाधना से करते हैं, जो इस रचना में कृत्तिवास रामायण से मौलिक उद्भावना दर्शाती है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कामायनी' एक कालजयी रचना है जिसके तार कई संदर्भों से जुड़ते रहे हैं। यह एकल अर्थवत्ता वाली रचना नहीं है। प्रसाद स्वयं लिखते हैं कि यदि मनु, इड़ा, श्रद्धा आदि की ऐतिहासिकता को ध्यान में रखते हुए अन्य अर्थ लगाए जाएं, तो उन्हें आपत्ति नहीं।

इसी अन्योक्ति में 'कामायनी' मानव मन तथा मानवता के विकास यात्रा का भी प्रस्थापन करती है।

<u>कामायनी: मानव मन की यात्रा</u> के रूप में

व्यक्ति जब आकंठ भोग विलास में डूबा रहता है तो उसका विनाश निकट होता है। इसके कारण उसके मन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'चिंता' जैसी भावना जागृत होती है। थोड़ी देर बाद जब वह विनाश के कारण व उसके समाधान पर विचार करता है तो मन में 'आशा' की उम्मीद जगती है। उसके बाद उसके मन के 'श्रद्धा', 'काम', जैसे भाव जागृत होते हैं। जिससे उसके मन में और अधिक इच्छाएँ जागृत होती हैं जिनका शमन सहज भोग विलास से नहीं हो सकता, अतः वह बुद्धि की ओर प्रेरित होता है और 'इड़ा' जैसे बुद्धिवादियों के संपर्क साधता है। इनसे उसकी अधिकार चेतना अबाधित सी महसूस होती है और 'संघर्ष' की ओर बढ़ता है। चूँकि बुद्धि पर सहज उसका अधिकार नहीं है, अतः श्रम की बुद्धि के आगे उसे हारना पड़ता है और ऐसी स्थिति में शांति ढूंढने हेतु 'निर्वेद' की तरफ चलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके बाद के मानव मन की यात्रा पर प्रगतिवादियों ने आक्षेप किए हैं। किंतु आदर्शवादी चिंतकों का कहना है कि ऐसे समय में जब बुद्धि व्यक्ति की इच्छाओं का पूर्ण समन नहीं कर पाती तब वह पुनः भावात्मकता की ओर बढ़ता है और इसी 'रहस्य' लक्ष्य से होते हुए 'आनंद' प्राप्ति के स्तर पर पहुँचता है।

कामायनी : मानवता के विकास के रूप में

कामायनी का एक अर्थ मानव के विकासक्रम से भी जुड़ता है। वस्तुतः मानव की जब उत्पत्ति हुई होगी तब वह अकेला होगा और अस्तित्व को लेकर चिंतित होगा किन्तु अपने आप में 'आशा' बनाए रखकर जीने की उम्मीद भी जगाई होगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसके कारण उसने स्वाभाविक रूप से 'श्रद्धा' व 'काम' जैसे भावों को जन्म दिया होगा जिसका परिणाम मानवोचित 'लज्जा' की उत्पत्ति हुई होगी। यहाँ तक वह शिकारी का जीवन जी रहा होगा किन्तु खाद्य अधिशेष बचने से उसने भौतिक विकास के बारे में भी सोचा होगा और 'इड़ा' जैसे अन्य लोगों के साथ मिलकर विज्ञान के जरिये विकास की राह तलाशनी शुरू की। किन्तु विकास की अंधी दौड़ में उसे भयंकर 'संघर्ष' का सामना करना पड़ता है और वह प्राकृतिक शक्तियों के आगे हार मान पुनः अपनी मूल भावनाओं की ओर लौटा होगा और भावनात्मक पक्ष पर बल देते हुए आध्यात्म की राह पकड़ी होगी। रहस्य, दर्शन, और 'आनंद' सर्ग में यही आध्यात्मिकता दर्शित होती है।

स्पष्ट है कि मानव मन तथा मानवता का विकास कामायनी का एक पक्ष है, एकमात्र है। अपनी अविछिन्नता के कारण ही यह कालजयी बन पड़ी है।

उत्तम
11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय साहित्य परंपरा में रचना का उद्देश्य रस को माना गया है। और रचना के मूल रस को अंगीरस कहा जाता है। अंगीरस तीन हो सकते हैं - वीर, शृंगार व शांत।

अंगीरस का निर्धारण रचना में बहुव्याप्त रस के आधार पर किया जाता है। कामायनी में जो रस सबसे ज्यादा उपस्थित है वह है - शृंगार रस। श्रद्धा के साथ के काम प्रसंगों में यह उभरता है और श्रद्धा को छोड़कर चले जाने पर विप्रलंभ शृंगार के रूप में दर्शित होता है। यद्यपि इड़ा संग प्रसंग को शृंगार नहीं माना जा सकता तथा निर्वेद सर्ग के बाद की पूरी रचना से शृंगार गायब हो जाता है, अत: शृंगार अंगीरस नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो सकता। जहाँ तक वीर रस की बात है तो वह यहाँ नहीं टिकता। आचार्य की दृष्टि से शृंगार के बाद 'शांत रस' सर्वाधिक है। शांत रस के दो प्रकार हैं - शममूलक तथा निर्वेदमूलक।

निर्वेदमूलक शांत रस वह है जब व्यक्ति संघर्षों से थक हार बैठ जाता है, यह निर्वेद सर्ग में व्याप्त हुआ है, अन्य कहीं नहीं; अतः यह अंगीरस नहीं हो सकता।

दूसरा प्रकार है, शममूलक शांत रस। यह वह रस है जो दुख व सुख के महसूस न होने वाली स्थिति में आता है। यह वह रस है जो प्रसाद के ~~दर्शन~~ प्रत्यभिज्ञा दर्शन की 'समरसता' से जुड़ता है तथा 'आनंद रस' के समान है। आचार्य अभिनवगुप्त ने आनंद रस को सभी रसों का मूल माना है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गौरतलब है कि 'आनंद रस' न केवल श्रद्धा के जरिये शुरू बात के मात्र रहता है, बल्कि 'निर्वेद सर्ग' के बाद एक मात्र रस रह जाता है। यह भी ध्यातव्य है कि प्रसाद की सभी रचनाओं के अंगीरस का निर्धारण परिणति के आधार पर होता है। इसलिए 'आनंद रस' ही कामायनी का अंगीरस रहता है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम की शक्ति पूजा आख्यानपरक ढांचे में लिखी गयी रचना है जो विविध अर्थ धारणा करती है। छायावाद पर आक्षेप किया जाता है कि वह निराशा पलायन का काव्य है, पश्चिम के रोमांटिसिज्म की तरह शक्ति नजर नहीं आती। किन्तु 'राम की शक्तिपूजा' इस आरोप का पूरी तरह खंडन करती है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने इसे 'शक्ति काव्य का उत्स' कहा है। ~~निर्मला जैन~~

निर्मला जैन ने अपने प्रसिद्ध लेख 'शक्ति काव्य का प्रतिमान : राम की शक्तिपूजा' में सिद्ध किया कि इस रचना की ~~हर~~ हर पंक्ति पर शक्ति का अहसास होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राम की शक्तिपूजा में शक्ति काव्य के तत्व

① भाषा ओजमयी है तथा ध्वन्यार्थता शक्ति का निरंतर अहसास कराती है।

② रचना का नामकरण भी 'शक्ति' से हुआ है और शक्ति की मौलिक कल्पना, शक्ति के रावण के पक्ष में होने व शक्ति की साधना व विजय के जरिये कथानक विकसित हुआ है।

③ पूरी कहानी सत्-असत् संघर्ष, आशा-निराशा; अंधकार-प्रकाश जैसे 'विरोधियों' में सामंजस्य के जरिये विकसित होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

स्पष्ट है कि 'राम की शक्तिपूजा'
शक्ति काव्य का सशक्त प्रमाण है,
इस मामले में यह किसी अन्य
शक्ति काव्य वाली रचना को, चाहे
वह भारत की हो या पश्चिम की,
को टक्कर देने में सक्षम है।

अच्छा उत्तर
और बेहतर बनाएँ

$\frac{7\frac{1}{2}}{15}$

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

प्रस्तुत गद्यावतरण मन्नू भंडारी के महत्वपूर्ण राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में लेखिका ने शिक्षित मध्यवर्ग का परीक्षण किया है। महेश नामक चरित्र द्वारा लल्पी (?) समोता द्वारा बिंसू के बारे में तहकीकात एवं बयान लेने पर, महेश बताता है कि -

व्याख्या -: बिसेसर आधुनिक लड़का था जो अपने अधिकारों एवं मध्यवर्ग की भूमिका से परिचित था। वह बार बार दलितों पर हो रहे अत्याचारों के बारे में खुद के साथ मुझ जैसे मध्यवर्गीय चिंतक को दूर करने के लिए आवाज उठाने को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कहता। वह कहता था कि समाज में वैचारिक क्रांति एवं चिंगारी लगाने का कार्य मध्यवर्ग का है, किन्तु विडंबना है कि तुम जैसे सुशिक्षित व्यक्ति गाँव में जोरावर जैसे लोगों द्वारा आम लोगों पर किए जा रहे अत्याचारों को कैसे चुपचाप सह सकता है।

विशेष ⇒ (1) प्रस्तुत पंक्तियों में मध्यवर्ग की 'उदासीनता' पर गहरा व्यंग्य किया है। यह चिंता मुक्तिबोध को भी है कि व्यक्ति अपने 'ऐतिहासिक उत्तरदायित्व' को नहीं निभा रहे हैं। दिनकर भी लिखते हैं -

"जो तटस्थ हैं समय लिखेगा
उनका भी अपराध।"

(2) प्रस्तुत : पंक्तियों से स्पष्ट है कि 'इर्विंग सम्मोहन भरी आत्मलीक' को आगे बढ़ाकर सामाजिक परिवर्तन की जिम्मेदारी बुद्धिजीवी वर्ग की है।

(3) लेखिका ने अपने 'परिवेश के प्रति ऋण शोध' हेतु ही यह रचना लिखी।

5 1/2 / 10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककला के पुरोधा जयशंकर प्रसाद की प्रतिनिधि रचना 'स्कंदगुप्त' से उद्धृत हैं। प्रसाद इन पंक्तियों में देवसेना के जरिये प्रकृति के प्रति अपने नजरिये एवं दर्शन की अभिव्यक्ति करते हैं।

देवसेना के रूप में प्रसाद मानते हैं कि जगत के कण कण में ब्रह्म का वास है, प्रत्येक पत्ती के हिलने से उत्पन्न लय में वह निहित है। मनुष्य ने अपनी 'ज्ञान इच्छा क्रिया' में तादात्म्य नहीं बैठा रखा है, इसलिए उसका जीवन 'विषम' है। मनुष्य पंडितों की तरह बेसुरा अर्थात 'विषमता की स्थिति' में जीवन जीता है जबकि पक्षी अपनी स्वरों में संगति स्थापित कर ही मधुर स्वर की निष्पत्ति कर पाते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- (1) 'प्रत्येक परमाणु के मिलने में सम' के जरिये गाँधी, टैगोर, अरविंदो के नववेदांत की छाप छोड़ी है।

(2) ~~यहाँ~~ यहां प्रसाद का मूल दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन भी व्याप्त हुआ है जिनके कारण विषमता का मूल कारण ज्ञान इच्छा क्रियाओं में सामंजस्य नहीं है। पक्षियों में स्वर निष्पत्ति इसलिए हो पाती है क्योंकि वे समरस अवस्था में है"।

(3) भाषा तत्सम, प्रतीकात्मक व बिंबधर्मी है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

निर्दिष्ट गद्यांश भारतेंदु के लब्ध प्रतिष्ठित नाटक 'भारत दुर्दशा' से अवतरित है। यहाँ भारत भारत दुर्दैव के आतंक के कारण मूर्छित हो गया है, जिसको उठाने का प्रयास भारत भाग्य करता है।

व्याख्या → भारत अपनी अंतर्निहित कमजोरियों तथा तत्कालीन शासन के आतंक के कारण मूर्छित अवस्था अर्थात गरीबी, बीमारी, बदहाली, अज्ञान, धर्म, कपट आदि से आसक्त हो, लगता है मानो स्वयं ही सो गया है। भारत इस कदर पिछड़ गया है कि अब उसके आगे बढ़ने की संभावना नहीं। भाग्य का रोना रोने वालों के साथ भाग्य के होते हुए भी कुछ करने को उद्यत नहीं है। हे देवता, यह वही भारत है जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अतीत में सोने की चिड़िया व विश्वगुरु का तमगा रखता था और आज यह बदतर दुर्दशा में है।

विशेष :- ① वस्तुतः भारत के निम्नतम होने का मूल कारण भारत के लोगों में अज्ञान, अविद्या, धर्म, साम्प्रदायिकता, मदिरा, स्वार्थ आदि है। भाग्यवादी होने के कारण भाग्य भी उनके साथ है, किन्तु शोषण इस कदर हुआ है कि विश्व गुरु से 'गरीब गुरु' की अवस्था में आ गया।

② भाषायी द्वैत की समस्या विद्यमान थी। किन्तु गद्य में खड़ी बोली प्रचलित थी। 'जूते में टाँका' जैसे मुहावरे का प्रयोग व्यंग्य के रूप में किया है।

③ भारत अंग्रेजों के समय तो शोषण दमन के कारण सोया ही था किन्तु धर्म व सामाजिक विकृतियों से जकड़कर अभी भी उठने का नाम नहीं ले रहा। हालिया घटनाओं से इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, जमीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

व्याख्येय उद्धरण हिन्दी की सशक्त उपन्यासकार मन्नू भंडारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ~~ली गयी है~~ | लिया गया है। इसमें उद्धृत पंक्तियों के जरिये सक्सेना को जोरावर के आतंक की दास्ताँ बतायी जा रही है।

व्याख्या ⇒ एसपी सक्सेना को बयान देते हुए बिंदा कहता है कि साहब, जोरावर गाँव का जमींदार व लठैत है। वह गाँव के सभी कमजोर लोगों पर जुल्म ढाहता है। बेचारे गाँववाले सदियों से शोषण के शिकार होते आये हैं, अब उनमें अपनी आवाज उठाने की हिम्मत नहीं है क्योंकि जमींदार व सरपंच के खौफ ने उनको दबा रखा है। दलितों के घर, जमीन सब पर कब्जा कर रखा है। उनकी जिंदगी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

को गुलाम-सी बना रखा है। किंतु आतंक इतना ज्यादा है कि जो आवाज उठाता है, उसकी हत्या से उड़वा देते हैं। अतः सभी लोग चुपचाप शोषण सहते रहते हैं।

विशेष :- (1) ~~शोषण~~ उच्च जातियों व लोगों का दलितों पर शोषण आज भी कायम है। बेलछी जैसे कांड अभी भी होते हैं। गुजरात के ऊना व बिहार के लक्ष्मणपुर की घटनाएँ इसी स्थिति को व्यंजित करती हैं।

(2) लेखिका ने स्पष्ट किया है कि उच्च वर्ग दलितों के अधिकारों पर बलपूर्वक अवैध कब्जा जमाए बैठा है।

(3) भाषा बेहद सरल, प्रवाहमयी, चुटीली व मारक है। भाषा की संप्रेषणीयता लाजवाब है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

उक्त पंक्तियाँ मन्नू भंडारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ली गयी हैं। जब लखन दा साहब से दत्ता बाबू के अखबार को उनके खिलाफ खबर छापने से रोकने की बात करता है, तब दा साहब आडंबर पूर्वक कहते हैं कि -

व्याख्या -: लखन, तुम स्वार्थ में केवल अपना हित देखकर मीडिया की स्वतंत्रता को दबाने का प्रयास कर रहे हो। अखबार सरकार के कार्यों की निष्पक्ष समीक्षा कर, सरकार के असली चरित्र से जनता को जागरूक करते हैं। मीडिया की स्वतंत्रता समाज के विकास के लिए जरूरी है, इसलिए कभी भी राजनेता को मीडिया को दबाने का प्रयास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नहीं करना चाहिए, बल्कि मेरी तरह मीडिया के सामने अपने को प्रस्तुत करना चाहिए और मीडिया को पूरी समीक्षा करने की आजादी देनी चाहिए।

विशेष :- (1) मीडिया की स्वतंत्रता आज के समय में ज्यादा प्रासंगिक हो गयी है, क्योंकि सरकार की शक्तियाँ बढ़ रही है और जनता जागरूक हो रही है। मीडिया ही वह माध्यम है जो इनके बीच सेतु बनकर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बन सकती है।

(2) दारोगा साहब जैसे दोगले लोगों द्वारा यह दिखाया जाता है, जिस प्रकार रायसाहब गोदान में 'ओंकारनाथ' को खरीदते हैं, वैसे ही दारोगा साहब दत्ता बाबू को।

5½/10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।" -दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हो गए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या यशपाल द्वारा ऐतिहासिक आधार लिये रचित कृति है। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि लेखक ने रचना में कितना यथार्थ इतिहास को लिया है और कितना अपनी कल्पनाशीलता का पुट दिया है।

दिव्या में कल्पनाशीलता के निर्धारण से पूर्व यशपाल का इतिहास बोध जानना आवश्यक है। यशपाल मार्क्सवादी होने के कारण ऐतिहासिक भौतिकवाद को मानते हैं। इसलिए रोमानी दृष्टिकोण उनके यहाँ स्पष्ट नहीं दिखता। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि "इतिहास व्यक्ति का अपनी परंपरा में आत्मविश्लेषण है।" तथा इतिहास का प्रयोग व्यक्ति 'भविष्य के संकेत'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्राप्त करने के लिए करता है। अत: यशपाल इतिहास को दोहराना नहीं बल्कि इतिहास के जरिये वर्तमान समस्याओं का यथार्थ विश्लेषण कर आधुनिक समस्याओं का हल ढूँढना चाहते हैं। इसलिए वे ऐतिहासिक वातावरण को ग्रहण करते हैं, न कि इतिहास लिखने का प्रयास करते हैं।

यशपाल ने प्राक्कथन में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि "दिव्या इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना मात्र है।" वे तो महज 'एक काल्पनिक चित्र' बनाकर उसमें अपनी कल्पनाशीलता, मौलिकता, रचनाशीलता व अपन दर्शन बोध का प्रक्षेपण कर उसको ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत भर करना चाहते थे।

जहाँ तक बात बात इतिहाससम्मतता की है, तो यशपाल ने ऐतिहासिक वातावरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साधने के लिए निम्न प्रयोग किए हैं -

(क) चरित्रों के स्तर पर मिलिन्द, पतंजलि व पुष्यमित्र ऐतिहासिक चरित्र हैं। इनकी जो विशेषताएँ दर्शायी हैं वे इतिहास सम्मत हैं, किन्तु ये खुद उपस्थित नहीं हुए हैं, महज अन्य लोगों के वर्णनों में संदर्भ की तरह आते हैं। इनके अतिरिक्त सभी चरित्र काल्पनिक हैं तथा किसी विशेष समस्या या स्थिति का प्रतीक हैं।

(ख) देश-काल को लेकर "बौद्ध काल" की चर्चा है, जब मिलिन्द का पश्चिमोत्तर भारत में शासन होता है, के तुरंत बाद का समय लिया है। देश अर्थात स्थान के स्तर पर सागल, मगध व मथुरा का वर्णन है। मगध का विवरण महज संवादों में है, प्रत्यक्ष नहीं। सागल व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मथुरा के बारे में कला का केन्द्र होने, दास व्यापार होने आदि का वर्णन इतिहास द्वारा प्रमाणित है।

(ग) ऐतिहासिक वातावरण को साधने के लिए भाषा के स्तर पर तत्कालीन शब्दावली का प्रयोग किया है, जो बृहद काल के ग्रंथों में मिलती है।

(घ) अपने मार्क्सवादी मूल्य थोपे हुए न लगें इसलिए चार्वाक ऋषि का अवलंब लिया है।

स्पष्ट है कि इतिहास को लेकर प्रसाद व गुप्त रोमानी व टेक्नोलॉजिक नजरिया रखते हैं, वहीं मोहन राकेश, धर्मवीर भारती आदि केवल संदर्भ मात्र लेते हैं; वहीं यशपाल ऐसे रचनाकार हैं जो वर्तमान समस्याओं को सार्वभौमिक बनाने के लिए वर्तमान मनुष्य का इतिहास में जाकर आत्मविश्लेषण करते हैं।

कल्पना के प्रयोगों द्वारा यथार्थ (समस्याओं) को भी रेखांकित का उल्लेख होना चाहिए

अच्छा प्रयास

10½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नायकत्व की दृष्टि से 'मैला आँचल' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य परंपरा नायकत्व की दृष्टि से प्रयोगधर्मी रही है। प्राचीन रचनाओं में नायक औदात्य सम्पन्न व कुलीन होते थे, किंतु प्रेमचंद ने क्रांति कर उसका लोकतांत्रिकीकरण कर दिया और 'होरी' जैसे किसान को नायकत्व प्रदान किया। इसी प्रकार, प्रसाद ने कामायनी व ध्रुवस्वामिनी, आदि के जरिये नायकत्व का नारीकरण किया। रेणु इससे अगले स्तर की क्रांति करते हैं और वे मानव से इतर 'अंचल' को नायकत्व प्रदान करते हैं।

लोकतंत्रीकरण

वस्तुत: नायक का फैसला इस बात से हो सकता है कि कथानक में कौन सा पात्र सर्वाधिक संचालित है; किस पात्र के विकास में रचनाकार ने सर्वाधिक ऊर्जा खर्च की है तथा कौनसा पात्र पाठक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की चेतना में प्रभाव छोड़ता है।

मैला आँचल के संदर्भ में स्पष्ट है कि यहाँ कोई केन्द्रीय घटना नहीं है, घटनाओं की बारम्बारता है। ~~अतः~~ इन घटनाओं में विभिन्न पात्र आते जाते रहते हैं। अतः किसी एकल चरित्र को नायक मानना कठिन है। यद्यपि डॉ. प्रशांत, कालीचरण व बावनदास में नायकत्व की झलक मिलती है। किन्तु कालीचरण जहाँ अंतिम बिन्दु स्तर पर कथानक से गायब सा हो जाता है, वहीं बावनदास तो अपने मूल्यों सहित वीरगति को प्राप्त करने को अभिशप्त है। डॉ. प्रशांत में थोड़ी अधिकता है, किन्तु गाँव के सभी पक्षों को उभारने में वे असमर्थ हैं।

अतः अँचल ही वह केन्द्रीय तत्व उभरकर सामने आता है, जिसे नायक का दर्जा दिया जा सकता है। रचनाकार खुद

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घोषणा करते हैं कि 'यह है मैला आँचल एक आँचलिक उपन्यास। xxx कथानक है पूर्णिया। मैंने इसके एक हिस्से के एक गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर कथा रची है।"

स्पष्ट है कि मेरीगंज ही वह पक्ष है, जिससे गाँव के सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पक्ष उभरते हैं; बल्कि सांस्कृतिक व भौगोलिक पक्षों का सांगोपांग व संपूर्णता में वर्णन मजबूर कर देता है कि यही नायक है। इसके अतिरिक्त, रचना को पढ़कर मेरीगँज की स्थिति ही चेतना में प्रतीत होती है और उस अँचल में खो जाने को बाध्य करती है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मैला आँचल में मेरीगंज का नायकत्व ही है, जिसने इसे महान रचना बना दिया। अच्छा

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'मैला आंचल' के नामकरण पर विचार करें। क्या आप इस उपन्यास का इससे बेहतर नाम सुझा सकते हैं? 15

नामकरण किसी रचना की वह पहचान है जो रचना के पढ़ने से पहले ही रचना की प्रारंभिक झलक प्रदान करती है। कोई भी महान रचनाकार ऐसा नामकरण करना चाहता है जो रचना के कथानक से मेल खाता हो तथा संक्षिप्त व सारगर्भित हो।

जहाँ तक बात 'मैला आँचल' के नाम को लेकर है तो इसकी औचित्यता का फैसला दोनों शब्दों के अर्थों को जानकर ही किया जा सकता है।

(क) यहाँ 'मैला' शब्द का प्रयोग रचनाकार ने इसलिए किया है कि जिस अंचल का वर्णन यहाँ किया है, वहाँ "फूल भी हैं, शूल भी हैं, गुलाब भी है, कीचड़ भी है।" गाँव का परिवेश इतना पिछड़ा, रूढ़िवादी व जहालत भरा है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लोगों का पूरा जीवन मैला नजर आता है। मूलतः मैला शब्द के माध्यम से शहर की तुलना में गाँव का कंट्रास्ट दिखाया गया है।

(ब) 'आँचल' शब्द को लेने के पीछे दो कारण हैं। पहला, कि रेणु आँचलिक उपन्यास नामक नयी उपन्यास धारा शुरू करना चाहते थे और दूसरा, कि अपनी मातृभूमि के आंचल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहते थे क्योंकि उन्होंने इसी अंचल में जन्म ग्रहण किया है।

अब यदि मैला आंचल से इतर विचार करें तो न तो कोई चरित्र ऐसा है जो नायकत्व का आधार बन सके। घटनाएँ इतनी तीव्रता से घटित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

होती है कि कोई नामकरण का आधार नहीं बन सकती। केवल स्थान ही वह तत्व है जो नामकरण का आधार बन सकता है। इसके लिए 'मेरीगंज' या 'मेरीगंज कोठी' या 'मेरा गाँव' जैसे नाम हो सकते हैं। किन्तु जो भाव व उद्देश्य "मैला आँचल" से अभिव्यक्त होता है, वह किसी अन्य नाम से नहीं।

अतः "मैला आँचल" नाम ही सर्वश्रेष्ठ है, ऐसा सटीक नाम रखने के लिए लगता है कि रचनाकार ने कई दिनों तक मानसिक जद्दोजहद की हो।

अच्छा

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण को प्रकट कीजिये। क्या यह दृष्टि उपन्यासकार यशपाल की नारी-दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त उपन्यास (दिव्या) समाज की विविध समस्याओं को मानवतावादी नजरिये से विश्लेषित करता है। ~~ब~~ इसने वर्णव्यवस्था, बौद्ध धर्म, दास व्यवस्था, पात्रों के चरित्र व नारी की स्थिति आदि का सर्जनात्मक वर्णन किया है। यशपाल द्वारा ~~द्वैत~~ इस उपन्यास में नारी दृष्टि के समाधान पक्ष का प्रतिनिधित्व चार्वाक मत का प्रतिनिधि मारिश करता है। चार्वाक तथा मार्क्सवाद दोनों के भौतिकवादी होने के कारण यह प्रश्न उठता है कि यशपाल चार्वाक मारिश के वेश में मार्क्सवाद संबंधी अपनी नारी दृष्टि को प्रक्षेपित कर रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~उत्तर:~~

मारिश की नारी दृष्टि ~~[illegible]~~, यशपाल की नारी दृष्टि का भी प्रतिनिधित्व करती है, इस तथ्य को निम्न विश्लेषण से समझ सकते हैं-

(1) मारिश चार्वाक मत का प्रतिनिधि है अतः ~~[illegible]~~ आत्मा, ईश्वर, इहलौकवाद में उसकी रुचि नहीं है। मारिश का स्पष्ट मत है कि जिस बौद्ध धर्म में नारी को त्याज्य माना गया है, वह निर्वाण चेतना मिथ्या है -

" भन्ते। जिस स्थूल जगत व शरीर ~~को~~ संपूर्ण जन महसूस करता है उसे मिथ्या मानना और जिस निर्वाण को केवल भिक्षु मानता है उसको सत्य मानना क्या तर्कसंगत है? xxx देवि यह देह ही सत्य है। यह शरीर ही सत्य है जो पाना है, इसी जीवन में पाओ।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) मारिशा का मत है कि नारी का कार्य मोक्ष प्राप्ति नहीं बल्कि सृष्टि को गति प्रदान करना है। यह विषा के जीवनमोह से विरक्ति पर कहता है-
"तुम्हारी कला तुम्हारी आकर्षण शक्ति का विस्तार मात्र है। वह नारी में सृष्टि की आदिशक्ति है।"

(3) मारिशा विषा के वेश्या बनने पर कहता है कि "जिस प्रकार कुलवधु का भोग उसका पति करता है, वैसे ही वेश्या का भोग संपूर्ण समाज तथा जन करता है। xxx वेश्या की स्वतंत्रता का भोग जनपद करता है, वह स्वयं नहीं।"

(4) मारिशा की मूल नारीदृष्टि कथा अंतिम पृष्ठों पर उभरती है जहां वह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नारी को स्वतंत्र व्यक्ति का दर्जा देता है तथा नारीत्व व पुरुषत्व के परस्पर अन्योन्याश्रय की बात करता है। वह 'धूल धूसरित मार्ग पर' उनके साथ समतामूलक तरीके से चलने की बात करता है।

यही वह दृष्टिकोण है जो यशपाल का स्वयं का है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण होने के कारण सहज ही मालिश की नारी दृष्टि मार्क्सवाद के नारी संबंधी मान्यताओं से मेल खाती है।

अच्छा

$11\frac{1}{2}$ / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल में निहित रेणु की राजनीतिक चेतना का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास परंपरा में राजनीतिक उपन्यासों की परंपरा मिल रही है। रेणु से पूर्व 'गोदान' व 'झूठा-सच' आदि जैसी रचनाओं में राजनीतिक पक्ष आते हैं, किन्तु जो संपूर्णता, तटस्थता रेणु ने मैला आँचल में व्यक्त की है, वह यथार्थ व संपूर्ण है।

गौरतलब है कि रेणु समाजवादी विचारधारा के पक्षधर थे अतः आजादी के बाद के शासन में जिस तरह जमींदारों, पूंजीपतियों का प्रभाव बढ़ रहा था, तो वे समझ चुके थे कि आजादी के सपने बेमानी थे। इसी मोहभंग की मानसिकता से वरकर गंभीर राजनीतिक चिंतन यहाँ करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मैला आँचल में राजनीतिक चेतना मुख्य रूप से कांग्रेस, समाजवादी दल व हिन्दु महासभा - आरएसएस के रूप में विश्लेषण में दिखती है।

कांग्रेस पार्टी ने निर्विवाद रूप से आजादी की लड़ाई लड़ाई। किन्तु आजादी के बाद उसका चरित्र अवसरवादी हो गया जिसपर कापरा जैसे तस्कर व अपराधियों का अधिकार हुआ, इस कारण गाँधीवादी मूल्य के पक्षधर बावनदास को "भारत माता अभी भी रो रही" नजर आती है। गाँधीजी की मौत के श्राद्ध के दिन बावनदास की कापरा द्वारा हत्या गाँधीवादी मूल्यों की अंतिम विदाई को अभिव्यक्त करता है।

दूसरा प्रमुख दल समाजवादी दल है जो गरीबों का पक्षधर होने का दावा करता है। रेणु ने विचारधारा के मोह से बचते हुए

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसकी भी कमियों को उजागर किया है। समाजवादी पार्टी भी वासुदेव के यादव होने की वजह से गाँव मेंजकर जातिवाद का समर्थन करती नजर आती है; पलिटर कर्फार व सोमाजाट जैसे अपराधियों को प्रश्रय देती है तथा दलित हित के कारण "दफा 40" के जनहित में होने के बावजूद उसका विरोध करती है।

तीसरी पार्टी हिन्दु महासभा सेठ है जिसे अनुशासन के आगे कुछ समझ नहीं आता।

उपरोक्त उपन्यास के जरिये रेणु ने तत्कालीन राजनीति की वास्तविकता को उजागर किया है कि कैसे सभी दल जनता को लूटने में लगे थे; कैसे वोटबैंक की राजनीति कर रहे थे। शुरुआती स्तर पर तत्कालीन लोकतंत्र की राजनीतिक वास्तविकताओं का यथार्थ रूप से पर्दाफाश के कारण हिन्दी साहित्य जगत रेणु का आभारी रहेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' नाम में उपन्यास का पूरा सार सन्निहित है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' मन्नू भंडारी द्वारा रचित अत्यंत चर्चित राजनीतिक उपन्यास है। यह उपन्यास अपने राजनीतिक, सामाजिक व मध्यवर्ग के सटीक विश्लेषण के कारण विशिष्ट बन पड़ा है।

उपरोक्त रचना का ~~इति~~ नामकरण 'महाभोज' अपनी गहरी अर्थवत्ता में पूरा सार सन्निहित करता है।

महाभोज का सामान्य अर्थ है- किसी की मृत्यु पर दिया जाने वाला भोज। किन्तु यहाँ ~~इसमें~~ इसका बेहद प्रतीकात्मक अर्थ निहित है। रचना के शुरू में जिक्र आता है कि "लावारिश लाश को गिद्ध नोंच नोंच कर खा जाते हैं। xxx ~~पर~~ विशेसर लावारिस नहीं।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ लाश बिसेसर की नहीं उस लोकतंत्र की है तथा उन सपनों की है जो आजादी के दीवानों ने लोगों को दिखाए। इस लाश को नोच-नोच कर खाने वाले गिद्ध वे लोग हैं जो सत्ता में रहकर लोकतंत्र व उन सपनों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। एक ओर दा साहब हैं जो इस लोकतंत्र की लाश पर दिखावा करके और शक्तिशाली होकर आये हैं, इधर वे सुकुल बाबू हैं जो इस लाश को नोंचकर सबसे बड़ी रैली आयोजित करने में सफल हुए हैं। इसी ओर, डीआईजी सिन्हा हैं जो इस लाश पर 'महाभोज' रूपी पार्टी कर रहे हैं; वह दत्ता बाबू हैं जो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

'मशाल' को ठंडा कर मस्ते कागज का जश्न मनाये जा रहे हैं। वस्तुत: ये सारे राजनेता, पत्रकार, अधिकारी लोकतंत्र की लाश पर महाभोज आयोजित कर रहे हैं। यही वह मंतव्य है जो रचना के हर पृष्ठ पर लेखिका उभारना चाहती हैं।

स्पष्ट है कि 'महाभोज' नाम में में वे लोग भी शामिल पक्ष है जिनकी मौत की जा रही है तथा जिनकी मौत पर जश्न मनाया जा रहा है। पहले तो हरिजनों की, तत्पश्चात बिंदु की और अब बिंदा की संभावित मृत्यु। वस्तुत: ये महज व्यक्ति नहीं बल्कि "दुर्निवार सम्मोहन भरी अग्नी लीक है" जिसे ये सब मिलकर दबाना चाहते हैं। किन्तु यह "अग्नीलीक बिंदु और बिंदा तक ही नहीं रुकती।" यही मंतव्य अंतत: प्रदर्शित हुआ है।

अन्य
8½/11

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)